class 11th c
sub hindi
date 18/4/20
learn and write in fair notebook

घर की आर्थिक बदहाली के बावजूद दारोगा मुंशी वंशीधर, सेठ अलोपीदीन की भारी रिश्वत को नकार कर अपनी कर्तव्यनिष्ठा का परिचय देता है और नमक के गैर-कानूनी व्यापार के मामले में उन्हें हिरासत में ले लेता है। समाज के अत्यंत धनी एवं इज़्ज़तदार अलोपीदीन के धन के आगे सारी व्यवस्थाएँ बिक जाती हैं और अदालत में लज्जित होने के बाद वंशीधर को नौकरी से मुअत्तल (निकाल देना) कर दिया जाता है। अंत में पंडित अलोपीदीन सत्य के आगे झुककर स्वेच्छा से वंशीधर को अपनी सारी संपत्ति का स्थायी मैनेजर नियुक्त करता है।

2 वंशीधर के पिता ने उसे कौन-कौन-सी नसीहतें दीं?

उत्तर *वंशीधर के पिता ने उसे निम्नलिखित नसीहतें दीं*

(*i*) ओहदे पर पीर की मज़ार की तरह नज़र रखनी चाहिए।

(*ii*) मज़ार पर आने वाले चढ़ावे (ऊपरी आमदनी) का ध्यान रखना चाहिए।

(*iii*) ज़रूरतमंद व्यक्ति से कठोरता से पेश आना चाहिए, ताकि उससे अधिकतम धन की प्राप्ति हो सके।

(*iv*) ऊपरी कमाई बहता स्रोत है, जिससे व्यक्ति की प्यास बुझती है। इस पर सबसे अधिक ध्यान दिया जाना चाहिए।

(*v*) बेगरज़ आदमी से विनम्रता से पेश आना चाहिए, क्योंकि वे तुम्हारे किसी काम के नहीं होते।

(*vi*) ऊपर की कमाई से ही समृद्धि आती है। इसी का सर्वाधिक महत्त्व है।

3 पंडित अलोपीदीन ने समाज में अपनी एक गहरी पहचान किस प्रकार बना ली थी?

उत्तर पंडित अलोपीदीन न केवल लक्ष्मी जी के उपासक थे, बल्कि एक दुनियादार व्यक्ति भी थे। वास्तव में, लाखों रुपयों का लेन-देन करने वाले अलोपीदीन ने अपने क्षेत्र के सभी छोटों-बड़ों को अपना ऋणी बना लिया था। अदालत से लेकर सभी सरकारी विभागों में कार्यरत कर्मचारी-अधिकारी उनकी कृपा प्राप्त करते थे। अंग्रेज़ अफ़सर जब कभी शिकार खेलने आते तो उनके यहाँ ही मेहमान होते थे। उन्होंने अपनी लक्ष्मी (धन) की शक्ति से सभी को अपने वश में कर रखा था। इसी कारण उन्होंने समाज में अपनी एक गहरी पहचान बना ली थी।

4 मुंशी वंशीधर सत्य-पक्ष पर अडिग होते हुए भी अकेले क्यों पड़ गए?

उत्तर मुंशी वंशीधर की ईमानदारी एवं सत्यनिष्ठा किसी से छिपी नहीं थी। इसके बावजूद अदालत में वंशीधर अलग-थलग पड़ गए, क्योंकि अदालत के सभी कर्मचारी एवं अधिकारी अलोपीदीन के खरीदे हुए गुलाम थे। सभी अलोपीदीन की कृपा के बोझ से दबे हुए थे। अलोपीदीन द्वारा की गई कृपा एवं सहायता से दबे अदालत के कर्मचारी-अधिकारी उन्हें बचाने की हर संभव कोशिश करने लगे और अंततः उन्होंने सेठ अलोपीदीन को बचा लिया। धन की शक्ति ने धर्म पर विजय प्राप्त कर ली। इसी कारण सत्य-पक्ष पर अडिग होते हुए भी मुंशी वंशीधर अकेले पड़ गए।

बोधात्मक प्रश्नोत्तर

|प्रत्येक 3 अंक|

1 'नमक का दारोगा' पाठ का प्रतिपाद्य लिखिए।

उत्तर प्रेमचंद की बहुचर्चित कहानी 'नमक का दारोगा' आदर्शोन्मुख यथार्थवाद का सार्थक उदाहरण है, जिसमें यथार्थ परिस्थितियों को दिखाने के बाद प्रेमचंद अंततः आदर्श के रूप में सत्य एवं न्याय की विजय दर्शाते हैं। यह कहानी धन के ऊपर धर्म की जीत दर्शाती है।